JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत–चीन संबंध एवं भारत की सुरक्षा सम्बन्धी चिन्ताएं

गीता देवी
शोध छात्रा, राजनीति शास्त्र, महात्मा गॉधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट,सतना,म0प्र0

डॉ. अमर जीत सिंह
अधिष्ठाता, ग्रामीण विकास एवं व्यवसाय प्रबंधन संकाय
महात्मा गॉधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट,सतना,म0प्र0

शोध सार

भारत तथा चीन एशिया की दो बड़ी शक्तियॉ हैं, जिनकी विदेश नीति का एशिया की राजनीति पर गहरा प्रभाव है। दोनो के पारस्परिक सहयोग या विवाद से केवल एशियाई सुरक्षा परिवेश ही नहीं बल्कि वैश्विक शक्ति संरचना पर प्रभाव दिखाई देता है। भारत–चीन सीमा विवाद से जहॉ भारत की सुरक्षा अस्थिरता से ग्रस्त है वहीं पड़ोसी राष्ट्र के मध्य स्थापित नाटकीय संबंधों एवं एशिया प्रशांत क्षेत्र में चीन की लगातार बढ़ रही सामरिक अभिरूचि से भारतीय सुरक्षा पर प्रभाव पड़ रहा है। यह समय की मांग और जरूरत है कि एक ओर जहॉ जनता के स्तर पर चीन से संबंध बढ़े वहीं दूसरी ओर भारत आर्थिक एवं सैन्य स्तर पर शक्तिबर्धन को गति दे।

विशेष शब्द – विदेश नीति, सुरक्षा पर प्रभाव, सामरिक संबंध, विस्तारवाद, एशियाई सुरक्षा।

भारत एवं चीन केवल पड़ोसी राष्ट्र नहीं है बल्कि प्राचीन काल से ही दोनों में सांस्कृतिक संबंध रहे हैं। दोनों की सभ्यताओं ने एक दूसरे पर भी अपना प्रभाव छोड़ा है। दोनों ही एक दूसरे में काफी हद तक समाविष्ट है। प्रथम सताब्दी (ई.पू.) के एक चीन ग्रन्थ से पता चलता है कि भारत एवं चीन के मध्य जल एवं थल मार्गों से व्यापारिक संबंध थे। चीन के 'कान–सू–प्रान्त' की सीमा पर 'तुन हांग' के स्थान से भारत के बौद्ध धर्म के प्रथम प्रचारक 'काश्यप–मातंग' और 'धर्मरक्ष श्वेत' अरब पर आरूढ़ होकर चीन की तत्कालीन राजधानी 'चड़गान' गये थे। जहॉ दोनों देशो ने 'श्वेताश्व' बिहार का निर्माण कराया था। इसके बाद चीनियों ने बड़े उत्साह व सम्मान के साथ बौद्ध धर्म को अपनाया ही नहीं बल्कि प्रसार–प्रसार किया था। स्वतंत्रता के बाद भारत एवं चीन के संबंधों की कहानी भारतीय नेताओं का आदर्शवादिता, स्वप्नदर्शिता और अदूरदर्शिता तथा चीनी विश्वासघात की कहानी है।

भारत सन 1947 में स्वतंत्र हुआ और 1949 में कोमिंताग सरकार के पतन के पश्चात चीन में साम्यवादी सरकार की स्थापना हुई। साम्यवादी शासन में यह महसूस हुआ कि भारत–चीन के मैत्रीपूर्ण संबंधों का मार्ग

समस्याओं से भरा हुआ है। चीन के प्रति भारत का दृष्टिकोंण मित्रतापूर्ण था। भारत ही वह राष्ट्र था जो साम्यवादी चीनी सरकार को सबसे पहले मान्यता दी थी। 30 दिसम्बर, 1949 को चीनी साम्यवादी गणतन्त्र को मान्यता देकर पं. नेहरू द्वारा चीन के अधिकार को स्वीकार करते ही भारत द्वारा चीन से बेहतर सम्बन्ध रखने का एक कदम था। स्वतंत्र भारत में हिन्दी–चीन भाई–भाई का नारा बहुत लोकप्रिय रहा है। जबकि भारत के तत्कालीन गवर्नर सी राजगोपालाचार्य तथा उप प्रधानमंत्री सरदार बल्लभ भाई पटेल जैसे कुशल राजनीतिज्ञा ने साम्यवादी चीन को मान्यता प्रदान करने का विरोध किया था। परिणाम स्वरूप जनवरी, 1950 में चीन ने तिब्बत पर आक्रमण करके इनकी आशंका को सिद्ध कर दिया।

साम्राज्यवादी नीति के कारण यह मित्रता अधिक समय तक नहीं चल सकी और चीन ने भारत के साथ विश्वासघात किया एवं 1962 में भारत पर अचानक आक्रमण कर दिया। फलस्वरूप आपसी संबंध बिगढ़ गये एवं कटुता आ गई। चीन ने पंचशील समझौते का पूर्ण रूपेण उल्लंघन किया। सन् 1957 से 1978 तक भारत–चीन संबंध तनावपूर्ण रहे। दूसरी ओर चीन भारत के पड़ोसी राष्ट्रों पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, म्यांमार को अनेक सहायतायें प्रदान कर अपनी ओर मिलाने लगा। 1978 से 2008 तक के काल को भारत–चीन के संवाद काल से जाना जाता है। दोनो देश कटुता को भूलकर अच्छे संबंध स्थापित करने की दिशा में प्रयासरत हुये। पीकिंग से संबंध को सुधारने की शुरूआत 1975 में टेबिल टेनिस की प्रतियोगिता से हुई जिसका आयोजन कलकत्ता में हुआ। 1978 में वांगपिगनान के नेतृत्व में चीनी प्रतिनिधि मण्डल का उच्च स्तरीय दल भारत आया। 1988 में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने 5 दिनों की चीन की यात्रा की। विगत 34 वर्षों में भारतीय प्रधानमंत्री का चीन यात्रा का यह पहला अवसर था। 1994 में चीन में भारत महोत्सव, किसी विदेश राष्ट्र का पहला महोत्सव आयोजित किया गया। यह यात्रा भारत–चीन संबंध में सुधार का संकेत थी।

भारत की सुरक्षा सम्बन्धी चिन्ताएँ :

1. तिब्बत का चीन में मिलाया जाना– 1 जनवरी 1950 को चीन के राष्ट्रपति माओत्सेतुंग ने साम्राज्यवादी आक्रमण से 30 लाख तिब्बतियों के स्वतंत्र कराने की घोषणा की। 7 अक्टूबर 1950 को तिब्बत में चीनी सेनायें घुस गई एवं तिब्बती सेनाओं को 23 मई 1951 को एक संधि पर मजबूरन हस्ताक्षर करना पड़ा। अप्रैल 1959 में तिब्बत के अन्दर एक विद्रोह हुआ। चीनियों ने श्रेष्ठ सैन्य शक्ति के बल पर तिब्बतियों को कुचल दिया। जवाहर लाल नेहरू ने उस समय तिब्बत की स्वतंत्रता का पक्ष लेते हुये चीन का खुल कर विरोध नहीं किया। तिब्बत के दलाईलामा को देश छोड़कर भारत में राजनैतिक शरण लेनी पड़ी। तिब्बत का चीन में मिलाना भारत की सुरक्षा की दृष्टि से चिंता का विषय था।

2. सीमा विवाद– वर्तमान में भारत का चीन से जिन मुद्दों पर विवाद है उनमें से प्रमुख है भारत–चीन के बीच सीमा विवाद। 1950–51 से ही चीन ने अपने आपत्तिजनक मानचित्रों में भारत के विशाल भू–भाग को अपना हिस्सा प्रदर्शित करना प्रारम्भ कर दिया था। लद्दाख के बड़े भू भाग पर चीनी दावे के साथ शुरू से चीन का दावा भारत के 50 हजार वर्ग मील क्षेत्र तक बढ गया, जिसकी परिणति 1962 के भारत चीन युद्ध में हुई। इसके बाद 1967 एवं 1975 में भी दोनों देशा के बीच हिंसक झडपें हुई। 1980 से जारी सीमा विवाद पर वार्ताओं के बाद भी इस दिशा में कोई ठोस प्रगति नहीं हो सकी। चीन जानबूझकर सीमा मुद्दों को हल करने में कोई रूचि नहीं ले रहा है।

3. मैकमोहन रेखा पर चीनी रूख– भारत चीन के बीच 4225 किलोमीटर लम्बी मैकमोहन रेखा दोनों देशों की सीमाओं को निर्धारित करती है। यह भारत, चीन, तिब्बत के मध्य अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं विवाद का मुद्दा है। चीन उस मोकमोहन रेखा को नहीं मानता है जिससे भारत एवं तिब्बत की सीमा तय होती है। भारत की 15000 वर्गमील भूमि जिस पर चीन ने धोखे एवं जबरदस्ती कब्जा कर रखा है उसे बैद्य करने एवं दूसरा तिब्बत का अस्तित्व अन्तर्राष्ट्रीय विधि की दृष्टि से नष्ट करना चाहता है।

4. चीन की अरूणाचल प्रदेश में गतिविधियॉ– भारत के अरूणांचल प्रदेश एवं चीन के बीच विवादग्रस्त क्षेत्र है। अरूणांचल प्रदेश का नाम प्रारम्भ में नेफा था। यह हिमाचल प्रदेश में तिब्बत और बर्मा अर्थात म्यांमार की सीमा पर स्थित है। इस क्षेत्र की उत्तरी सीमा चीन और दक्षिण पूर्वी म्यांमार तथा पश्चिमी सीमा भूटान से मिलती है। दक्षिणी सीमा रेखा असम राज्य से मिलती है। जिस पर चीन अपने अधिकार का दावा करता रहता है। 22 जनवरी 1972 को पुर्नगठन करते हुये संसद द्वारा एक एक्ट पारित करके उत्तरी पूर्व सीमान्त राज्य को अरूणांचल नाम देकर केन्द्र द्वारा शासित राज्यों की कोटि में स्थान दिया गया था। चीन सम्पूर्ण अरूणांचल प्रदेश पर अपनी दावेदारी करता है एवं विवादित बताने के लिये वहॉ के निवासियों को स्टेपल वीजा देता है।

5. ब्रम्हपुत्र नदी जल विवाद– भारत तथा चीन के बीच जल विवाद प्रमुख रूप से ब्रम्हपुत्र नदी से संबंधित है। ब्रम्हपुत्र दोनों देशों के मध्य से बहती है। चीन ने तिब्बत में ब्रम्हपुत्र नदी पर अपनी सबसे बड़ी पन–बिजली परियोजना **'जम डाइडो पावर स्टेशन'** का निर्माण किया है। इस परियोजना से भारत को यह चिन्ता है कि जल आपूर्ति को बाधिक करने का प्रयास चीन कर सकता है अथवा संघर्ष के समय चीन इन बांधों से अतिरिक्त पानी छोड़ सकता है जिससे भारत में बाढ़ का गंभीर खतरा पैदा हो सकता है।

6. आक्साई चीन सड़क– चीन, भारत के जम्मू को भारत का अभिन्न भाग स्वीकार करने में आना कानी करता है। दूसरी ओर पाक अधिकृत कश्मीर को पाक का अंग स्वीकारने में चीन को कोई आपत्ति नहीं है। भारत में गृहमंत्री श्री अमितशाह ने संसद में यह कह चुके हैं सम्पूर्ण भारत का अर्थ पाक अधिकृत कश्मीर एवं आक्साईचिन सहित है।

7. दक्षिण चीन सागर मुद्दा– चीन अपनी ऊर्जा पूर्ति की दृष्टि से दक्षिण सागर के अधिकांश 90 प्रतिशत भाग को अपना कहता है। इस क्षेत्र में गैस एवं प्रचुर मात्रा में प्राकृतिक तेल उपलब्ध है। चीन वियतनाम स्प्राटल द्वीप समूह तथा ताइवान पर भी अपना दावा प्रस्तुत करता है।

8. पाक अधिकृत कश्मीर – 22,236 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में विस्तृत जम्मू कश्मीर की भू स्त्रातेजिक विशिष्टता जहॉ एक ओर अमेरिका व चीन जैसी महाशक्तियों की दक्षिण एशियाई सामरिक उत्कण्ठा को उत्प्रेरित करती है वहीं पाकिस्तान, कश्मीर को अपनी वास नलीं व कोरी हुण्डी मानने के अतिरिक्त बिना कश्मीर के स्वयं को अधूरा समझ रहा है तथा विधिक रूप से भारत का यह भू–भाग उसकी राष्ट्रीय अखण्डता व अस्मिता से जुड़ा हुआ प्रश्न है। पीओके एवं गिलगित बालटिस्तान में चीन की लगातार सक्रियता बढ़ रही है। चीन की **'वन वेल्ट वन रोड'** की महत्वाकांक्षी परियोजना का ढांचा विकास चल रहा है। चीन का उद्देश्य जल, रेल, सड़क मार्गों के माध्यम से अफ्रीका, यूरोप एवं एशिया से संपर्क बढ़ाना है। भविष्य को ध्यान में रखते हुये भारत का हित सुरक्षित नहीं है। इस प्रकार चीन की महाशक्ति बनने की उनकी मनोवृत्ति एवं कश्मीर में चीन की निरन्तर बढ़ रही सामरिक उपस्थिति भारत के समक्ष 21वीं श्ताब्दी की सर्वाधिक सुरक्षा चिंता बन गई है।

9. हिन्द महासागर में धुसपैठ– पिछले कुछ वर्षों से चीन स्थलीय सीमा के साथ–साथ भारत के सामुद्रिक सीमा में भी घुसपैठ कर रहा है। उसने हिन्द महासागर में अपनी गतिविधियॉ तेज कर दी हैं। बंगाल की खाड़ी में स्थित 572 छोटे बड़े द्वीपों वाला केंद्रशासित प्रदेश अंडमान निकोबार द्वीप समूह बड़े पैमाने पर चीनी घुसपैठ का केन्द्र बना हुआ है। चीन म्यांमार, पाकिस्तान, श्रीलंका के संयुक्त हिस्सेदारी में परियोजना चालू कर भारत को हिंद महासागर में नाकेबंदी की रणनीति तैयार कर रहा है। इसी परिप्रेक्ष्य में भारत के लिए स्त्रातेजिक दृष्टि अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हिन्द महासागर में चीन का बढता प्रभाव भारतीय राष्टीय सुरक्षा के लिए विशेष चिंताजनक है।

10. जम्मू कश्मीर की स्वायत्ता– भारत का जम्मू कश्मीर पुर्नगठन विधेयक अगस्त, 2019 में अस्तित्व प्राप्त करने के बाद भारत के प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू व जम्मू कश्मीर रियासत के महाराजा हरिसिंह के बीच भारतीय संविधान के अनुच्छेद 370 के तहत विशेष अधिकार प्राप्त हो गया और जम्मू कश्मीर तथा लद्दाख प्रदेश को केन्द्रशासित प्रदेश का दर्जा प्रदान किया गया। तब से चीन कश्मीर मुद्दे को संयुक्त राष्ट्र चार्टर व संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद से द्विपक्षीय संधि के आधार पर प्रकरण निपटाने को दवाब दे रहा है।

11. डोकलाम विवाद– डोकलाम भारत के सिक्किम राज्य की सीमा से लगा है जो भूटान तथा चीन के पठारी सीमा को स्पर्श करता है। यह क्षेत्र भारत, चीन तथा भूटान तीनों देशों का एक **'टाई जंशन'** क्षेत्र है। चीन इस पर अपना प्रभुत्व बनाये हुये है। इस कारण यह क्षेत्र पूर्व से ही विवाद की वजह है। इस विवाद को जुलाई 2017 में चीन द्वारा सीमा क्षेत्र में सडक निर्माण से की गई। भारत ने सड़क निर्माण पर अपना विरोध

जताया है। डोकलाम में विवाद की जड़ भूटान में एक दुर्गम चारागाह लगभग 250 किलेमीटर का पठारी क्षेत्र है लेकिन इसकी भौगोलिक स्थिति को भारत और चीन दोनों के लिए रणनीतिक रूप से बेहद महतवपूर्ण माना जाता है। डोकलाम में सडक निर्माण से भारत के पूर्वोत्तर राज्यों की सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है।

12. संयुक्त राष्ट संघ पर भारत की स्थायी सदस्यता– भारत संयुक्त राष्ट्र संध के उन सदस्य देशों में सम्मिलित है जिसमें 01 जनवरी 1942 को वांशिंटन में संयुक्त राष्ट्र घोषणा पर हस्ताक्षर हुये थे। 25–26 अप्रैल 1945 तक सेन फ्रांसिसकों में ऐतिहासिक संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भी हिस्सा लिया था तथा भारत यू.एन.ओ. के सभी सिद्धान्तों का पुरजोर समर्थन करता है किंतु चीन, भारत की स्थायी सदस्यता का विरोध करता है।

निष्कर्ष –

अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि स्वतंत्रता से वर्तमान तक भारत–चीन के सामरिक संबंधों में भारत ने सदैव ही चीन के साथ मधुर संबंध बनाने का प्रयत्न किया है लेकिन चीन को जब भी मौका मिला उसने विस्तारवादी होकर भारत–चीन के सामरिक सम्बन्धों की मधुरता को कड़वाहट में बदल दिया। यदि दोनों देश समन्वयपूर्ण अपनी–अपनी पूर्वाग्रहयुक्त भावनाओं से हट कर काम करेंगे तो एशिया महाद्वीप हीं नहीं वरन अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक पटल पर दोनों देशों की गरिमामय स्थिति होगी एवं आपसी संबंध मधुर होंगे। भविष्य भारत और चीन का है। अब समय है चीन को समझने, देखने और जानने का। चीनी जन मानस भी भारत को बुद्ध के देश के रूप में देखते हैं। निश्चित ही एशिया के साथ ही साथ विश्व व्यवसाय में शांति, सौहार्द, सहिष्णुता एवं समन्वय के भाव विकसित होंगे एवं समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होगा। अगर भारत तथा चीन का समझौता हो जाये तो निश्चित ही क्षेत्रीय राजनीति और अंतर्राष्ट्रीय राजनीति पर व्यापक सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1 कृष्णानन्द शुक्ल, सुरक्षा परिदृश्य, संस्करण 2008, पृ.273

2 सुधीर कुमार, यूथ काम्पिटिशन, टाइम्स, नवम्बर 1993 पृ.29

3 डॉ. शिवाली अग्रवाल एवं पूनम रानी भारत चीन संबंध : दशा और दिशा अतीत से वर्तमान तक, शोध मंथन, 2017, पृ.130

4 डॉ. अनिरुद्ध सिंह यादव एवं डॉ. सहदेव शर्मा, स्वतंत्र भारत के युद्ध एवं युद्ध के सिद्धान्त, प्रकाश बुक डिपो, बरेली, 2009 पृ.103–104

[5] Samuel Baid, self determination for kashmiri's : A camouflage for pak's own claim Strategic Analysis, June 1990 Vol, No III p. 327

[6] Cited in S. Sundararajan, Op. cit. No. 1 P. 67

———